__/__/___

Tender Heart High School, Sector 33-B, Chandigarh.
Date -   Class - V
Subject - Hindi Literature   Page - 1
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

पुस्तक - नवतरंग - 5
पाठ - 1 'अभिलाषा' (कविता)

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

यह पाठ कक्षा पाँचवी की हिन्दी साहित्य का है। आज हम इस पाठ में पाठ-1 कविता 'अभिलाषा' के बारे में पढ़ेंगे।

बच्चो ! यह कविता 'अभिलाषा' कवि डॉ॰ देवदत्त तिवारी ने लिखी है, उन्होंने इस कविता में अपने देश के बारे में चर्चा की है। कवि इस कविता में कह रहे हैं कि हमारा देश भारतवर्ष बहुत सुंदर है। यह मेरी जन्मभूमि है। भारतवर्ष की प्राकृतिक सुंदरता अद्वितीय है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। इस पावन भूमि पर अनेक ऋषि मुनियों, साधु-संतों तथा महापुरुषों ने जन्म लेकर इस भारत भूमि को कृतार्थ किया है। कवि ने इस कविता में पवित्र नदियों, झीलों, पर्वतों, खेत-खलिहानों, रंग-बिरंगे फूलों से भरे उपवन, फलों से लदे वृक्ष, छः ऋतुएँ, सूर्य के तेजपुंज का वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि हम सब भारतवासी हैं। हम सबके मन में अपनी जन्मभूमि के प्रति प्रेम, लगाव होना चाहिए। हम सब यही कामना करते हैं कि बार-बार इसी भारत भूमि पर जन्म लें और अपनी मातृभूमि की सेवा करें।

बच्चो ! कविता शुरू करने से पहले हम इसमें आए कठिन शब्दों के अर्थ जान लेते हैं।

Scanned with CamScanner

__/__/____

Date - Class-V
Subject - Hindi Literature Page-2
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

अभिलाषा	- कामना, इच्छा	प्रखर	- तेज
सिंधु	- समुद्र	रज-कण	- धूल के कण
तृण	- तिनका	मधु ऋतु	- वसंत ऋतु
शैल	- पर्वत	सघन	- घने
शिखर	- पर्वत की चोटी	पावन	- पवित्र

बूँद - बूँद से सिंधु बना है,
बूँद - बूँद से बादल,
बूँद - बूँद से निर्झर झरता
बहता सर - सर सरिता का जल।

बच्चो! कविता की इन पंक्तियों में कवि ने एक बूँद का महत्व बताया है कि बूँद - बूँद एकत्रित होकर एक समुद्र बन जाती है। बूँद - बूँद से ही बादलों का निर्माण होता है और वही बूँद इकट्ठी होकर एक झरने का रूप लेकर बहती है। यही झरना आगे चलकर एक नदी का रूप धारण कर लेता है और सर - सर करके निरंतर बहता रहता है। हमारा भारतवर्ष इसी प्राकृतिक सौंदर्य से सुशोभित है।

तृण - तृण से सजती है धरती,
कण - कण से वे शैल - शिखर,
सुमन - सुमन से उपवन सजता,
किरण - किरण से सूर्य प्रखर।

कविता की इन पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि पृथ्वी खेत - खलिहानों में फसल रूपी

Scanned with CamScanner

__/__/____

Date- Class- V
Subject- Hindi Literature Page- 3
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

तिनकों से भरी हुई हैं और वह सुशोभित हो रही हैं। कण-कण एकत्रित होकर ऊँचे पर्वत, चोटियाँ बनी हैं। फूल-फूलों से बगीचे शोभायमान हो रहे हैं अर्थात प्रत्येक फूल बगीचे की शोभा को बढ़ा रहा हैं। सूर्य की प्रत्येक किरण उसे तेज प्रदान करती हैं। इससे वह तेजोमयी व चमकीला रूप प्रदान करता हैं। प्रत्येक तिनका धरती को सजाता हैं।

बच्चो! इस सप्ताह हम यहीं तक कविता पढ़ेंगे। कविता का शेष भाग हम अगले सप्ताह पढ़ेंगे।

गृह कार्य

≒ कविता को अच्छे से समझने के लिए इसे दो-तीन बार पढ़ें।
≒ इस पाठ के पृष्ठ-4 पर आए शब्द-अर्थ अपनी हिन्दी साहित्य की उत्तर-पुस्तिका पर लिखें।

धन्यवाद।

Last page.

Scanned with CamScanner